वृद्ध विषयक विश्व की प्रथम कविता-संग्रह

मैथिली साहित्य के अजातशत्रु *प्रो. (डॉ.) इन्द्रकान्त झा* का जन्म 9 जनवरी,1943 को दरभंगा जिला के कसरौर गाँव में हुआ। इन्होंने 1970 के दशक से रचना करते हुए अद्यावधि अनेक शोधात्मक और स्वतंत्र पुस्तकों की रचना की जिसे मील का पत्थर कहा जाता है। बाद के दिनों में इनकी केवल पद्य रचनाएं ही मिलती हैं जिस पर कवि कोकिल विद्यापति और रविन्द्रनाथ ठाकुर का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। डॉ. झा पटना विश्वविद्यालय में मैथिली विभागाध्यक्ष के साथ ही संस्कृत एवं मैथिली अकादमी, पटना के निदेशक भी रह चुके हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- विद्यापतिकालीन मिथिला, विद्यापति साहित्यालोचन, विद्यापति विमर्श, मदनेश्वर मिश्र (विनिबन्ध), इन्द्र प्रेम गीत, इन्द्र दिव्यांजलि इत्यादि। इन्हें 1987 ई. में राजभाषा विभाग, पटना द्वारा विद्यापति पुरस्कार, 2003 में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना द्वारा लोकभाषा पुरस्कार तथा 2017 में साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा अनुवाद पुरस्कार प्राप्त है। ये एक गम्भीर चिन्तक के रूप में समाज में अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्हें खुशी प्रदान कर सुखी जीवन की कामना करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के हिन्दी अनुवादक *राहुल राज गुप्ता* का जन्म 29 नवम्बर, 1998 ई. को सीतामढ़ी जिला के बनौल गाँव में आचार्या अंजुला देवी (शिक्षिका) एवं स्व. आचार्य विनोद कुमार गुप्ता (शिक्षक) के पुत्ररत्न के रूप में हुआ। श्री गुप्ता मैथिली विषय से यू.जी.सी. नेट/जे.आर. एफ. परीक्षा उत्तीर्ण कर सम्प्रति ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के विश्वविद्यालय मैथिली विभाग में पी-एच.डी. उपाधि हेतु कनीय शोध-प्रज्ञ के रूप में शोधरत है। इनके द्वारा निरंतर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोध आलेख, निबंध, कविता, समीक्षा आदि प्रकाशित होते आ रहे है। इनकी प्रथम हिन्दी अनूदित पुस्तक *'मैं बूढ़ा हूँ'* आपके हाथों में है।

अनुप्रास प्रकाशन
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
+91 94305 83847
anuprasprakashan@gmail.com

आवरण : अनुप्रास डिजाइन
हिन्दी कविता-संग्रह
₹ 250
9 789391 371760
www.anuprasprakashan.com

अनुप्रास प्रकाशन

मैं बूढ़ा हूँ

मूल मैथिली : प्रो. इन्द्रकान्त झा

अनुवाद : राहुल राज गुप्ता

प्रो. इन्द्रकान्त झा कृत मैथिली कविता-संग्रह *हम बूढ़ छी* का हिन्दी अनुवाद

मैं बूढ़ा हूँ

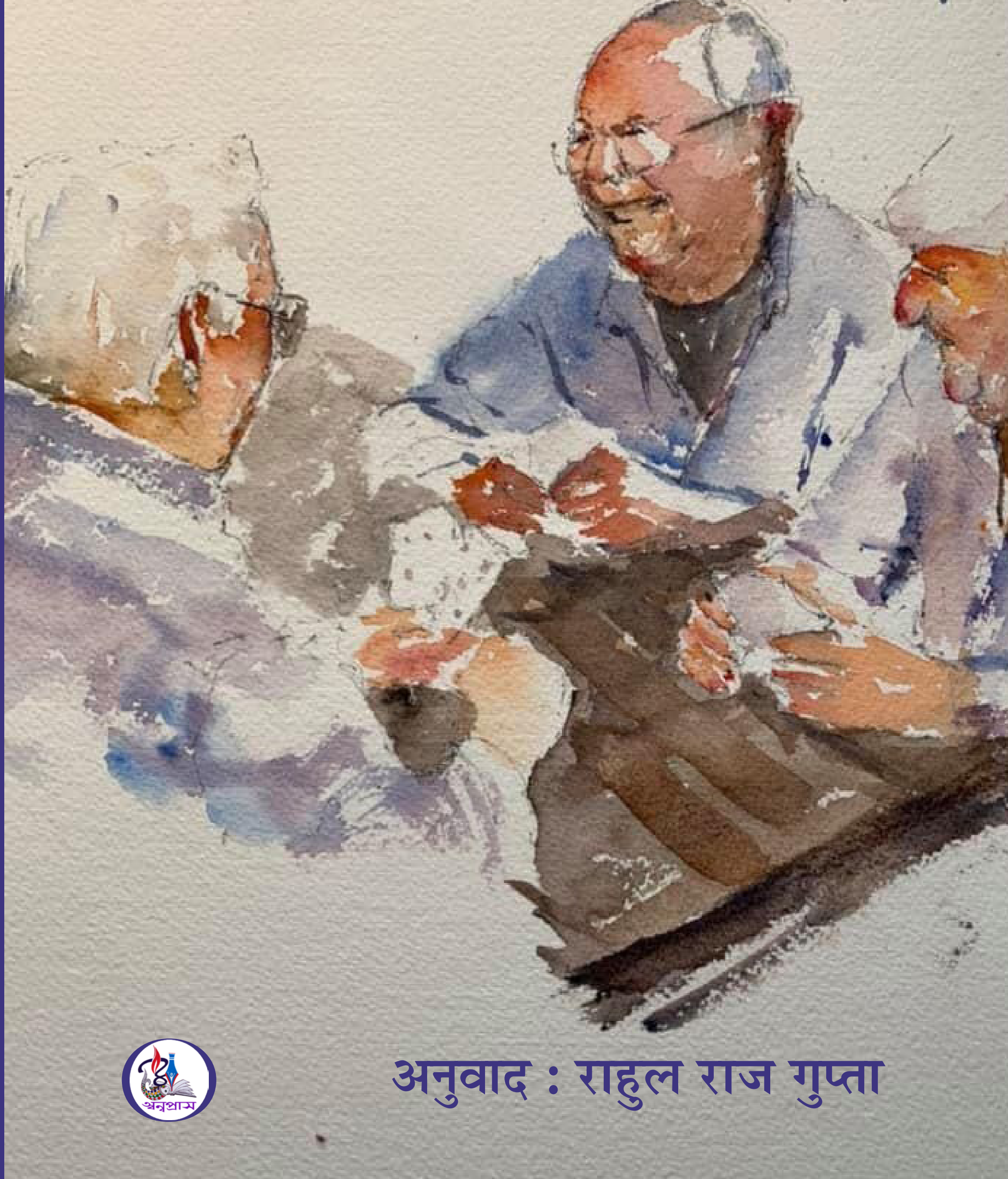

अनुवाद : राहुल राज गुप्ता